MASA-05

Section –B

(Short answer questions)

लघूत्तरात्मक वाले प्रश्न

Note:Each answer should not exceed 100 words.

नोट : आप अपने उत्तर को अधिकतम 100 शब्दों में परिसीमित कीजिये।

1. किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) दधत्सन्ध्यारुणव्योमस्फुरत्तारानुकारिणी।

द्विषद्द्वेषोपरक्ताङ्गसङ्गिनीः स्वेदविप्रुषः।।

(ब) एकस्तनस्तुङ्गतरः परस्य वार्तामिव प्रष्टुमगान्मुखाग्रम्।

यस्याः प्रियार्द्धस्थितिमुद्वहन्त्या सा पातु वः पर्वतराजपुत्री।।

(2) इस श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत में कीजिए।

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसुविद्विषाम्।

कथंकारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति।।

(3) शिशुपालवध की कथा वस्तु सारांश में लिखिए।

(4) निम्न में एक की व्याख्या संस्कृत में कीजिए–

1. तेजस्विमध्ये तेजस्वी दवीयानपि गण्यते।

2. त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति।

(5) निम्न शब्दों में दो को विस्तार के समझाइए।

1. अनलधूलिनिकरः 2. अनन्तः 3. अनेकक्रतुदीक्षितः 4. शतक्रतुः

(6) शिशुपालवध की कथावस्तु का विवेचन उदाहरण के साथ कीजिए।

(7) विक्रमांगदेवचरित के काव्यगत महत्व को स्थापित कीजिए।

(8) शिवमहिम्नःस्तोत्र के दो श्लोक लिखकर संस्कृत व्याख्या कीजिए।

9. किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) एकस्य सेवातिशयेन शङ्के पङ्केरुहस्यासनतां गतस्य।
आराधितो यः सकलं कुटुम्बं चकार लक्ष्मीपदमम्बुजानाम्।।

(ब) तव तत्त्वं न जानामि किदृशोऽसि महेश्वरः।
यादृशोऽसि महादेव! तादृशाय नमो नमः।।

(10) इस श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत में कीजिए।
अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसुविद्विषाम्।
कथंकारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति।।

(11) कादम्बरी की कथा वस्तु सारांश में लिखिए।

(12) निम्न में एक की व्याख्या संस्कृत में कीजिए–
1. ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।
2. त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति।

(13) निम्न शब्दों में दो को विस्तार के समझाइए।
1. सुरसिन्धुतीरे 2. त्रैलोक्यबन्धुः 3. श्रीधाम 4. सकोपः

(14) शिशुपालवध के काव्यगत महत्व को स्थापित कीजिए।

(15) विक्रमांगदेवचरित की कथावस्तु लिखिए।

(16) शिवमहिम्नःस्तोत्र के दो श्लोक लिखकर संस्कृत व्याख्या कीजिए।

17. किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत–
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता।।

(ब) कथासु ये लब्धरसाः कवीनां ते नानुरज्यन्ति कथान्तरेषु।

न ग्रन्थिपर्णप्रणयाश्चरन्ति कस्तूरिकागन्धमृगास्तृणेषु।।

(18) इस श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत में कीजिए।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।

अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।

(19) विक्रमांगदेवचरित की काव्य सुन्दरता लिखिए।

(20) निम्न में एक की व्याख्या संस्कृत में कीजिए–

1. कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः।

2. नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।

(21) निम्न शब्दों में दो को विस्तार के समझाइए।

1. बद्धमूलः 2. कादम्बरी 3. हिमस्रुत् 4. लब्धरसाः

(22) शिशुपालवध की कथा का विवेचन उदाहरण के साथ कीजिए।

(23) विक्रमांगदेवचरित के काव्यगत महत्व को सिद्ध कीजिए।

(24) इस श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिए–

असिमगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे

सुरतरुवरशाखालेखनीपत्रमुर्वी।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं

तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

25. किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) आरम्भन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्राः भवन्ति च।

महारम्भाः कृतधियः तिष्ठन्ति च निराकुलाः।।

(ब) महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।

अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।

(26) इस श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत में कीजिए।

कथासु ये लब्धरसाः कवीनां ते नानुरज्यन्ति कथान्तरेषु।

न ग्रन्थिपर्णप्रणयाश्चरन्ति कस्तूरिकागन्धमृगास्तृणेषु।।

(27) शिशुपालवधम् की काव्य सुन्दरता लिखिए।

(28) निम्न में एक की व्याख्या संस्कृत में कीजिए–

1. प्रायेणाकारणमित्राण्यतिकरुणार्द्राणि।

2. महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।

(29) निम्न शब्दों में दो को विस्तार के समझाइए।

1. बद्धादरः 2. मितभाषी 3. परिग्रहः 4. पुण्ड्रकशर्करा

(30) कादम्बरी की कथा का विवेचन उदाहरण के साथ कीजिए।

(31) विक्रमांगदेवचरित के पात्रगत महत्व को सिद्ध कीजिए।

(32) इस श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिए–

धर्मद्रुहामत्र निवारणाय कार्यस्त्वया कश्चिदवार्यवीर्य।

रवेरिवांप्रसरेण यस्य वंशेन सुस्थाः ककुभः क्रियन्ते।।

33. किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) दुर्दान्तमुत्प्लुप्य निरस्तसादिनं सहासहाकारमवलोकयज्जनः।

पर्याणतस्रस्तमुरोविलम्बिनस्तुरंगमं प्रद्रुतमेकया दिशा।।

(ब) बहुलरजसे विश्वौत्पत्तौ भवाय नमो नमः

प्रबलतमसे तत्संहाराय नमो नमः।

जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः

प्रमहसिपदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।

(34) इस श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत में कीजिए।

तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः।

यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।

(35) शिशुपालवधम् की पात्र संरचना लिखिए।

(36) निम्न में एक की व्याख्या संस्कृत में कीजिए–

1. तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि।

2. महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।

(37) निम्न शब्दों में दो को विस्तार के समझाइए।

1. मदनान्कतकः 2. बहुभाषी 3. अपरिग्रहः 4. पुण्ड्रकशर्करा

(38) कादम्बरी में पात्रों का विवेचन कीजिए।

(39) विक्रमांगदेवचरित के पात्रगत महत्व को सिद्ध कीजिए।

(40) इस श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिए–

हेमाचलस्येव कृतः शिलाभिरुदारजाम्बूनदचारुदेहः।

अथाविरासीत् सुभटस्त्रिलोकत्राणप्रवीणश्चुलुकाद् विधातुः।।